

J-7205

PAPER-III

Time: 2½ hours COMPARATIVE LITERATURE [Maximum Marks: 200

Number of Pages in this Booklet: 36

Number of Questions in this Booklet: 26

Instructions for the Candidates

- 1. Write your roll number in the space provided on the top of this page.
- 2. Answers to short answer/essay type questions are to be given in the space provided below each question or after the questions in the Test Booklet itself.

No Additional Sheets are to be used.

- 3. At the commencement of examination, the question booklet will be given to you. In the first 5 minutes, you are requested to open the booklet and compulsorily examine it as below:
 - (i) To have access to the Test Booklet, tear off the paper seal on the edge of this cover page. Do not accept a booklet without sticker-seal and do not accept an open booklet.
 - (ii) Tally the number of pages and number of questions in the booklet with the information printed on the cover page. Faulty booklets due to pages/questions missing or duplicate or not in serial order or any other discrepancy should be got replaced immediately by a correct booklet from the invigilator within the period of 5 minutes. Afterwards, neither the question booklet will be replaced nor any extra time will be given.
- 4. Read instructions given inside carefully.
- 5. One page is attached for Rough Work at the end of the booklet before the Evaluation Sheet.
- 6. If you write your name or put any mark on any part of the Test booklet, except for the space allotted for the relevant entries, which may disclose your identity, you will render yourself liable to disqualification.
- 7. You have to return the Test booklet to the invigilators at the end of the examination compulsorily and must not carry it with you outside the Examination Hall.
- 8. Use only Blue/Black Ball point pen.
- 9. Use of any calculator or log table etc. is prohibited.
- 10. There is NO negative marking.

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

- 1. पहले पृष्ठ के ऊपर नियत स्थान पर अपना रोल नम्बर लिखिए।
- 2. लघु प्रश्न तथा निबंध प्रकार के प्रश्नों के उत्तर, प्रत्येक प्रश्न के नीचे या प्रश्नों के बाद में दिये हुये रिक्त स्थान पर ही लिखिये।

इसके लिए कोई अतिरिक्त कागज का उपयोग नहीं करना है।

- 3. परीक्षा प्रारम्भ होने पर, प्रश्न-पुस्तिका आपको दे दी जायेगी। पहले पाँच मिनट आपको प्रश्न-पुस्तिका खोलने तथा उसकी निम्नलिखित जाँच के लिए दिये जायेंगे जिसकी जाँच आपको अवश्य करनी है:
 - (i) प्रश्न-पुस्तिका खोलने के लिए उसके कवर पेज पर लगी सील को फाड़ लें। खुली हुई या बिना स्टीकर-सील की पुस्तिका स्वीकार न करें।
 - (ii) कवर पृष्ठ पर छपे निर्देशानुसार प्रश्न-पुस्तिका के पृष्ठ तथा प्रश्नों की संख्या को अच्छी तरह चैक कर लें कि ये पूरे हैं। दोषपूर्ण पुस्तिका जिनमें पृष्ठ / प्रश्न कम हों या दुबारा आ गये हों या सीरियल में न हों अर्थात किसी भी प्रकार की त्रुटिपूर्ण पुस्तिका स्वीकार न करें तथा उसी समय उसे लौटाकर उसके स्थान पर दूसरी सही प्रश्न-पुस्तिका ले ले। इसके लिए आपको पाँच मिनट दिये जायेंगे। उसके बाद न तो आपकी प्रश्न-पुस्तिका वापस ली जायेगी और न ही आपको अतिरिक्त समय दिया जायेगा।
- 4. अन्दर दिये गये निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढें।
- उत्तर-पुस्तिका के अन्त में कच्चा काम (Rough Work) करने के लिए मूल्यांकन शीट से पहले एक पृष्ठ दिया हुआ है।
- 6. यदि आप उत्तर-पुस्तिका पर अपना नाम या ऐसा कोई भी निशान जिससे आपकी पहचान हो सके, किसी भी भाग पर दर्शाते या अंकित करते हैं तो परीक्षा के लिये अयोग्य घोषित कर दिये जायेंगे।
- 7. आपको परीक्षा समाप्त होने पर उत्तर-पुस्तिका निरीक्षक महोदय को लौटाना आवश्यक है और इसे परीक्षा समाप्ति के बाद अपने साथ परीक्षा भवन से बाहर न लेकर जायें।
- 8. केवल नीले / काले बाल प्वाईंट पैन का ही इस्तेमाल करें।
- किसी भी प्रकार का संगणक (कैलकुलेटर) या लाग टेबल आदि का प्रयोग वर्जित है।
- 10. गलत उत्तर के लिए अंक नहीं काटे जायेंगे।

COMPARATIVE LITERATURE

तुलनात्मक साहित्य

PAPER-III

प्रश्न-पत्र — III

NOTE: This paper is of two hundred (200) marks containing four (4) sections.

Candidates are required to attempt the questions contained in these sections

according to the detailed instructions given herewith.

नोट: यह प्रश्नपत्र दो सौ (200) अंको का है एवं इसमें चार (4) खंड है। अभ्यर्थियों को इन में समाहित

प्रश्नों का उत्तर अलग दिये गये विस्तृत निर्देशों के अनुसार देना है।

SECTION - I खण्ड - I

NOTE: This section contains five (5) questions based on the given paragraph. Each question should be answered in about thirty (30) words and each carries five (5) marks.

 $(5 \times 5 = 25 \text{ marks})$

नोट: इस खंड में निम्नलिखित अनुच्छेद पर आधारित पाँच (5) प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग तीस (30) शब्दों में अपेक्षित है। प्रत्येक प्रश्न पाँच (5) अंकों का है।

 $(5 \times 5 = 25 3$ अंक)

Indian tradition has given an honoured place to criticism. Great poets themselves recognized the importance of criticism to their work as practitioners and went so far as to concede: poets, there are many, but good critics, very rare indeed. The poet and the critic were considered the two eyes of the Muse of Poetry; hence the critic was the Sahrdaya. It is interesting to note that the period covering the 'Dark Ages of Europe' was the most creative period in Indian criticism with names like Bharata, Bhāmaha, Dandin, Vāmana Ānandavardhana, Kuntaka, Abhinavagupta and Ksemendra - all in the first millennium of the Christian era. It should not sound jingoistic to claim that the New Criticism of America has a long way to go before it can catch up with India's yesterdays in criticism.

But what of today? As in other things creativity may have dried up and we have lost touch with the past of India in a vital way. For, while the great works of criticism, which gave us valuable concepts like rasa, guna, rīti, vakrokti, dhvani, rasa-dhvani and aucitya were translated into almost every Indian language which had a literature, and scholars knew of them, criticism was seldom pursued as an important activity. Was it because culture nourished a tiny minority which shared certain assumptions which in their turn were related to the acknowledged scheme of values, viz. dharma, artha, kāma, moksa? The minority was not committed to demonstrating how the critical concepts were actually realized in works of art. Instead, various simplified popular version of great works of art were made available to the people at large. Perhaps that is the way a māhākāvya became a dharmaśatra. Consequently masses of people were concerned not with how a work of art was realized by the poet but, by and large, with what it meant to them.

Now this is something which came from the empirical West. Even there it became a pervasive activity only during the past hundred years or so. Small wonder, then, that all our literatures (except perhaps Tamil, which produced a notable work of criticism in Tolkāppiyam, which is said to be a contemporary of Bharata's

Nātyaśātra and embodied poetics of an advanced kind but which suffered the same fate as the Sanskrit work), which have derived their poetics from Sanskrit without actually practising them in their day-to-day literary activity have been attracted to western criticism. It is seen from a reading of the essays in this volume that criticism, as we understand today, is almost wholly a European, to be precise British, phenomenon. It came to us with English education about 150 years ago and gathered momentum in the past few decades of our Independence.

Is it because our literatures have, in the past 200 years, been greatly influenced by English poetry, fiction and drama? For, in music which has largely maintained its purity, our critical approaches are still indigenous. It is interesting that in discussions of music, regardless of our sophistication or commonalty, we still use the term 'experience', not 'enjoy' or 'criticize'. The rāgas and rāginīs are meant to evoke different rasas. Rasa is the end in view - One sometimes surmises that by simply substituting rasa, rasika, rasikata, in place of delight, critic, critical we shall not only avoid distortion of experience but eliminate much medicority which does not deserve to be called literary or artistic.

भारतीय परम्परा ने आलोचना को सम्मानपुर्ण स्थान प्रदान किया है। सुप्रसिद्ध कवियों ने स्वयं अपनी रचनाओं को लिखते हुवे आलोचना के महत्व को स्वीकार किया है और उन्होंने यहां तक माना है: ''कवि, यहां बहुत है, मगर अच्छे आलोचक सचमुच दुर्लभ है''। कवि और आलोचक को सरस्वती देवी की दो आँखें माना गया था। फलतः आलोचक सहृदय था। यह सम्मान यहां अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि 'यूरोप का अंधयूग' भारतीय आलोचना का सृजनात्मक काल है जिसमें भरत, भामह, दण्डी, वामन, आनंदवर्धन, कुन्तक, अभिनव गुप्त और क्षेमेन्द्र जैसे आलोचक हुए । ये सभी आलोचक ईसवी की प्रथम सहस्राब्दी में हुए। यह दावा करना जिंगोवादी नहीं लगना चाहिये कि अमेरिका की नई आलोचना को अभी बहुत लम्बा मार्ग तय करना होगा, फिर कहीं वह शिखर तक पहुंच सकता है जहां भृतकाल में भारतीय आलोचना पहुंची थी। मगर आज की दशा क्या है? दूसरी वस्तुओं की भांति सृजनात्मकता बिलकुल शुष्क हो गई है और हम पुरातन भारत से काफी हद तक कट चुके हैं। क्योंकि, आलोचना की महान रचना जिन्होंने हमें रस, गुण, रीति, वक्रात्कि ध्वनी, रस ध्वनि तथा औचित्य जैसी अवधारणाएं प्रदान की, उनका लगभग उन सभी भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुआ जिनका साहित्य का और विव्दान उनकी इन रचनाओं से परिचित थे । परन्तु आलोचना को महत्वपूर्ण कार्य के रूप में कभी लिया ही नहीं गया । क्या इसका कारण यह था कि संस्कृति ऐसे क्षण अल्पसंख्यकों का पोषण करती थी जिनकी धारणाएं साझी थी और मानव-मूल्यों यथा धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि से जा जुडीं। अल्पसंख्यक इस बात के लिए प्रतिबध्द नहीं थे कि वे यह प्रदर्शित करते कि ये धारणाएं कला कृतियों से किस प्रकार यथार्थत: चिरतार्थ हुई हैं। उसके स्थान पर आखिर इन महान कला कृतियों के अनेक सामान्य लोकप्रिय रूप लोगों को उपलब्ध करवाए गए। इसीलिए शायद 'महाकाव्य' धर्मशास्त्र बन गई। फलतः लोगों का इससे कोई सरोकार न रहा कि कवि ने किसी कलाकृति को कैसे चरीतार्थ किया है बल्कि लगभग सभी को यही था कि कलाकृति का उनके लिए क्या अभिप्राय है।

J - 7205 4

यह एक ऐसी बात है जो अभीभांच्य पश्चिम से आई है। वहा भी यह एक विस्तृत क्रिया के रूप में केवल लगभग पिछले 100 वर्षों में ही फैली है। इसिलए कोई आश्चर्य नहीं है कि हमारे सभी साहित्य। शायद तिमल को छोड़ जहाँ 'तोलकापियम' के रूप में आलोचना का महत्वपुर्ण कृति का सृजन हुआ जिसे भरतमुनि के नाट्य शास्त्र के काल का रचना बतलाया जाता है, और जिसमें उच्च कोटि का काव्य शास्त्र निहित है। मगर जिसकी नियित भी संस्कृत रचनाओं जैसी ही हुई। जिन्होंने अपनी रचनाओं के लिए संस्कृत काव्य शास्त्र को आधार बनाया, मगर उन्होंने ही अपनी प्रतिदिन की साहित्यिक क्रियाओं में उन्हें नहीं अपनाया। ऐसी किव पाश्चात्य आलोचना की और आकर्षित हुए हैं। इस पुस्तक के निबन्धों से अध्ययन से पता चलता है कि आलोचना, जैसा कि आज हम समझते है, पूर्णतया यूरोपिन है संक्षेप में कहें तो यह ब्रिटिश है। हमें यह लगभग 150 वर्ष पूर्व अंग्रेजी शिक्षा के माध्यम से प्राप्त हुई और स्वतन्त्रता–प्राप्ति के पिछले कुछ दशकों में इसने गित पकड़ी।

क्या इसका यह कारण है कि हमारे साहित्य पिछले दो सौ वर्षों में अंग्रजी काव्य, गल्प और नाटक से प्रभावित हुए हैं ? क्यों कि संगीत जिसने अपनी शुद्धता को बनाये रखा है उसके सामान्य आलोचनात्मक अविर्गम देशीय हैं। यहां नोट करना रोचक है कि संगीत की चर्चा में साम्य और सूक्षमता के विचारों को दर किनार करते हुए हम अब भी आलोचना (क्रिटिसाइज), और मजा लेना (एन्ज्वाए) शब्दों की जगह अनुभव (एक्सपीरिएंस) शब्द का प्रयोग करते है । राग-रागिनयों का मुख्य उद्देश्य विभिन्न रसों की निष्पत्ति होता है इस दृष्टिकोण में रस अन्तिम उद्देश्य होता है। क्या कभी ऐसा लगता है कि डीलाईट (आनन्द), आलोचक और आलोचनात्मक-इन शब्दों में स्थान पर रस, रिसक और रिसकता को रख कर हम ने केवल अनुभव का तोड-मरोड़ से बचेंगे बिल्क बहुत सी मध्यमता को समाप्त कर सकेंगे जिसे साहित्यिक अथवा कलात्मक कहलाने का कोई अधिकार नहीं है।

1.	Write a note on Indian critical tradition of the past. भूतकाल की भारतीय आलोचना परम्परा पर नोट लिखिए।

2.	Why is criticism not considered as an important intellectual pursuit in India, today ? आज भारतमें आलोचना को महत्वपुर्ण वौद्धिक गतिविधि क्यों नहीं माना जाता है।
3.	How does the author of the passage view Tolkappiam ? परिच्छेद के लेखक का <u>तोलकप्पिय</u> के प्रति कैसा दृष्टिकोण है ?

4.	What is the charge levelled against literary criticism in our own languages?
	हमारी अपनी भाषाओं की साहित्यिक आलोचना के विरूद्ध क्या दोषारोपण कियाजाता है ?
5.	Why are our critical approaches to Music indigenous in nature even today?
	क्या कारण है कि हमारे संगीत के आलोचनात्मक अभिगम आजभी देशी है ?

SECTION - II

खण्ड —II

NOTE:	This section contains fifteen (15) questions each to be ans thirty (30) words. Each question carries five (5) marks.	wered in about $(5 \times 15 = 75 \text{ marks})$
नोट :	इस खंड में पाँच-पाँच (5-5) अंकों के पंद्रह (15) प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न व (30) शब्दों में अपेक्षित है।	हा उत्तर लगभग तीस
		(5×15=75 अंक)
6. Give	a definition of 'Influence'	
	न्युंश' (प्रभाव) की परिभाषा दें।	

7.	Define literary fortune.
	लिटरेरी फॉरचून (साहित्यिक समृद्धि) की परिभाषा दीजिए।
0	
8.	Define Analogy.
	एनालोजी (साम्य) की परीभाषा दीजिए।

9.	What is a classic ? 'क्लासिक' क्या है ?
10.	Define 'archaing' in translation : अनुवाद में 'आरकेइंग' की परिभाषा दीजिए।

11.	Define 'motif' and 'theme'
	' मोटिफ' एवं 'थीम' की परिभाषा दीजिए।
12.	Define 'Kunstlerroman'
	'कुंसतर्लरोमां' की परिभाषा दीजिए।

13.	Define 'Technopaigna'.
	'टेकनोंपेगन' को परिभाषित कीजिए।
14.	Define Ezra Pound's concept of 'logopoeia' in translation.
	एजरा पॉण्ड की अनुवाद में 'लोगोपीइआ' अवधारण की परीभाषा लिखिए।

15.	What, according to George Watson, is the most challenging prospect for the future of comparative literature ?
	जार्ज वाटसन के अनुसार, तुलनात्मक साहित्य के लिए भविष्य में सर्वाधिक चुनौती क्या है ?
16.	Explain the two problems faced by the literary historians.
	उन दो समस्याओं को स्पष्ट कीजिए जिनका सामना साहित्यिक इतिहासकारों को करना पड़ता है ?

13

P.T.O.

J - 7205

17.	Write a short note on Calvin Brown's Music and literature
	कालविन ब्राउन की रचना ' <u>म्यूजिक एंड लिट्रेचर</u> ' पर संक्षिप्त नोट लिखिए।
18.	Define orientalism.
10.	'ओरिएंटलिज्म' (पूर्व देशीयता) की परिभाषा दीजिए।
	जारिद्वाराज्या (रूप पराविता) यम वारणाया पाजिदा

19.	What is 'sense for sense' translation ? अनुवाद में 'अर्थ के स्थान पर अर्थ' से क्या अभिप्राय है?
20.	Define 'Placing' फ्लेसिंग को परिभाषित कीजिए।

SECTION - III

खण्ड —III

NOTE: This section contains five (5) questions of twelve (12) marks each. Each question is to be answered in about two hundred (200) words.

($5 \times 12 = 60 \text{ marks}$)

नोट: इस खंड में प्रत्येक बारह-बारह (12-12) अंकों के पाँच (5) प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग दो सौ (200) शब्दों में अपेक्षित है।

 $(5 \times 12 = 60 3 \dot{a})$

- 21. Attempt a critique of Frenzel's <u>Themes in world Literature.</u> फ्रेन्जल की पुस्तक थीम्स इन वर्ल्ड लिटरेचर में दिए विचारों पर आलोचनात्मक टिप्पणी लिखें।
- **22.** Comment on the role of Inter cultural studies in Comparative Literature. तुलनात्मक साहित्य में अर्न्तसांस्कृतिक सांस्कृतिक अध्ययन पर आलोचनात्मक नोट लिखें।
- 23. Write a note on 'Source' in Comparative Literature. तुलनात्मक साहित्य में स्त्रोत पर नोट लिखें।
- **24.** Discuss Goethe's contribution to world Literature. विश्व साहित्य में गोथे के योगदान की चर्चा करें।
- 25. Comment on the three types of translation discussed by Dryden. ड्राइडन के द्वारा बताए अनुवाद के तीन प्रकारों की चर्चा कीजिए।









SECTION - IV खण्ड—IV

NOTE: This section consists of one essay type question of forty (40) marks to be answered in about one thousand (1000) words on any of the given topics.

This question carries 40 marks.

 $(40 \times 1 = 40 \text{ marks})$

नोट: इस खंड में चालीस (40) अंकों का निबन्धात्मक प्रश्न है जिसका उत्तर निम्नलिखित विषयों में से

केवल एक पर, लगभग एक हजार (1000) शब्दों में अपेक्षित है।

 $(40 \times 1 = 40$ अंक)

26. Translation and Deconstruction.

अनुवाद और विसंरचनावाद

OR / अथवा

American School of Comparative Literature

तुलनात्मक साहित्य का अमरीकी स्कूल

OR / अथवा

Bhakti Movement in Indian Literature भारतीय साहित्य में भक्ति आन्दोलन







FOR OFFICE USE ONLY							
	Marks Obtained						
Question Number	Marks Obtained	Question Number	Marks Obtained	Question Number	Marks Obtained	Question Number	Marks Obtained
1		26		51		76	
2		27		52		77	
3		28		53		78	
4		29		54		79	
5		30		55		80	
6		31		56		81	
7		32		57		82	
8		33		58		83	
9		34		59		84	
10		35		60		85	
11		36		61		86	
12		37		62		87	
13		38		63		88	
14		39		64		89	
15		40		65		90	
16		41		66		91	
17		42		67		92	
18		43		68		93	
19		44		69		94	
20		45		70		95	
21		46		71		96	
22		47		72		97	
23		48		73		98	
24		49		74		99	
25		50		75		100	

Total Marks Obtained (i	n words)
(in	n figures)
Signature & Name of the	e Coordinator
(Evaluation)	Date